



डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन

शोधकर्ता

रोमेश कुमार जंघेल
शोधार्थी (शिक्षा)
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भिलाई (छ.ग.)

शोध निर्देशक

डॉ. सुमित्रा मौर्य
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा संकाय)
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय भिलाई (छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की पाठ्य सहगामी गतिविधियों की अभिवृत्ति का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना है। अध्ययन में पाठ्य सहगामी गतिविधियों के विभिन्न आयामों जैसे विद्यालयीन गतिविधियाँ, पुस्तकालय गतिविधियाँ, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सहभागिता, विद्यालय क्लब गतिविधियाँ तथा शारीरिक गतिविधियों का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव ज्ञात किया गया। साथ ही लिंग एवं संस्थान के प्रकार (शासकीय एवं निजी) के आधार पर भी तुलनात्मक अध्ययन किया गया। शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के 800 डी.एल.एड. छात्राध्यापकों को नमूने के रूप में चयनित किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु शिक्षण दक्षता मापनी एवं पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों में पाया गया कि पाठ्य सहगामी गतिविधियों का छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता पर सकारात्मक एवं सार्थक प्रभाव पड़ता है। उच्च पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति वाले छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता निम्न अभिवृत्ति वाले छात्राध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाई गई। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि शासकीय संस्थानों के छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता निजी संस्थानों की अपेक्षा अधिक प्रभावी पाई गई। अतः शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पाठ्य सहगामी गतिविधियों को अधिक महत्व दिया जाना आवश्यक है।

Keywords

डी.एल.एड. छात्राध्यापक

पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ

शिक्षण दक्षता

शिक्षक प्रशिक्षण

भूमिका

शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा जाता है, क्योंकि किसी भी देश की भावी पीढ़ी के शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का सृजन एवं संवर्धन का दायित्व शिक्षक पर रहता है। समाज की पारंपरिक विरासत को नवीन पीढ़ी में हस्तांतरित करने, वर्तमान समय के अनुकूल उसमें आवश्यक संशोधन करने एवं कुप्रथाओं के प्रति जागरूक करने का दायित्व शिक्षक के ऊपर ही होता है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा में मातृत्व तुल्य प्यार एवं दायित्व के साथ प्रारंभिक कौशलों में दक्ष करने के अलावा माध्यमिक स्तर की शिक्षा में किशोरावस्था की शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तनों के प्रति जागरूक करते हुए नैतिक विकास का पथ प्रदर्शन शिक्षक ही करता है। महाविद्यालय स्तर की शिक्षा पर विद्यार्थियों के चिंतन स्तर का सर्वोत्तम विकास करते हुए विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, पत्रकारिता, कानून जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों के विकास में शिक्षक अपना योगदान देता है। भारत की प्राचीन विरासत भी शिक्षा एवं संस्कृति से समृद्ध रही है। भारत में दुनिया के अन्य देश शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे। यहाँ विश्व के सर्वोत्तम विश्वविद्यालय संचालित होते थे, जहाँ वेद, व्याकरण, कला, संगीत, गणित, खगोल, भूगोल, राजनीति जैसे महत्वपूर्ण विषयों की शिक्षा दी जाती थी। भारत में गुरुकुल एक ऐसी संस्थान थी जहाँ बच्चों के नैतिक, चारित्रिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक विकास का संपूर्ण दायित्व वहाँ के गुरु पर निर्भर करता था। इस समय के गुरु इन सभी कार्यों में दक्ष होते थे तथा सभी छात्रों का पिता तुल्य शिक्षण एवं संस्कार की संपूर्ण व्यवस्था करते थे। इस समय गुरु का स्थान सर्वोत्तम एवं पूजनीय था। धीरे धीरे गुरु का स्थान शिक्षकों के द्वारा लिया जाने लगा एवं गुरुकुल का स्थान विद्यालयों ने ले लिया। कार्य आज भी वही है, सिर्फ समयानुकूल उसके विषयवस्तु एवं शिक्षण विधि में परिवर्तन हो गया है।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् –

सन 1973 में भारत सरकार के द्वारा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (नेशनल काउंसिल फार टीचर एजुकेशन) का गठन किया जो कि शिक्षक शिक्षा के लिए भारत में एक राष्ट्रीय स्तर की सलाहकार संस्था के रूप में कार्य करती है, और अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रमों के योजना एवं नीति निर्माण में सहायता करने के अलावा समय-समय पर शिक्षक शिक्षा के मापदंडों के अनुसार समीक्षा करती है।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के द्वारा 1973 में निम्नलिखित सुझाव दिए गए थे –

- अल्प अवधि के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण को विश्वविद्यालय अनुमती प्रदान करें।
- स्कूल अध्यापकों को विस्तार सेवाओं से जोड़ा जाए।
- प्रत्येक जिले में मानव संसाधन व पठन-पाठन सामग्री के निर्माण के लिए अध्यापक केंद्र खोला जाए और प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाए।

चरों की व्याख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वतंत्र चर पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति, शाला अनुभव कार्यक्रम तथा सूचना प्रौद्योगिकी अभिवृत्ति का आश्रित चर शिक्षण दक्षता पर प्रभाव देखा गया है। साथ ही लिंग तथा संस्थान के प्रकार के आधार पर भी स्वतंत्र चर का आश्रित चर पर प्रभाव देखा गया है।

शिक्षण दक्षता

दक्षता का सामान्य अर्थ है किसी कार्य को पूर्ण करने में लगाया गया समय, उर्जा एवं श्रम की मात्रा। शिक्षण दक्षता में ज्ञान, कौशल और मूल्य सम्मिलित हैं, जो किसी भी शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के बाद ही प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षण दक्षता वह व्यवहारिक योग्यता है जिसे शिक्षक अपनी गतिविधियों द्वारा प्रदर्शित करता है, यह किसी भी व्यवहारिक परिस्थिति में प्रमुख सिद्धांतों और शिक्षण तकनीकों को प्रयोग करने की योग्यता है। यह ज्ञान एवं उसकी प्रक्रियाओं विधियों तथा संप्रेषण के संसाधनों को उचित रूप से उपयोग करने का तरीका है। शिक्षण दक्षता से तात्पर्य शिक्षक के उस शिक्षण कार्य से संबंधित है जिससे शिक्षक किसी भी कार्य को अधिकतम रूप से गुणवत्तायुक्त पूर्ण करता है। वर्तमान समय में दक्षता का उपयोग योग्यताओं एवं उपलब्धियों को मापने के लिए किया जाता है। शिक्षण दक्षता का तात्पर्य है कि एक व्यक्ति का विभिन्न शिक्षण विधियों, उपविधियों, कौशलों, बाल मनोविज्ञान, पाठ्यसहगामी गतिविधियों एवं सामुदायिक सहभागिता का सर्वोत्तम रूप से उपयोग करते हुए अध्यापन कार्य करने में सक्षम होना। यह शिक्षक की वह योग्यता है, जो विद्यार्थियों को उनके मनोविज्ञान, परिवेश, उम्र बुद्धि-लब्धि विविधता एवं शिक्षण सिद्धांतों को

ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों के विकास एवं अधिगम में सहायता प्रदान करता है। यह एक प्रकार से शिक्षक को शिक्षकीय गुणों से युक्त होने की क्षमता है, जिसे वह प्रशिक्षण संस्थान में प्राप्त करता है और विद्यालय में उनका उपयोग करता है।

पाठ्य सहगामी गतिविधि

पाठ्य सहगामी गतिविधि से तात्पर्य शिक्षण संस्थानों में मुख्य पाठ्यक्रम के अलावा आयोजित की जाने वाली अन्य गतिविधियों से है, जोकि मुख्य पाठ्यक्रम का हिस्सा तो नहीं होता परन्तु उसके सहायक रूप में छात्रों के शारीरिक, मानसिक, अध्यात्मिक एवं चारित्रिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान करता है। यह मुख्य पाठ्यक्रम के साथ-साथ चलते हुए छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। विद्यालय के बाहर की दुनिया से सामंजस्य करने, चारित्रिक, नैतिक एवं व्यवहारिक विकास के साथ भविष्य निर्माण में पाठ्य सहगामी गतिविधियों की भूमिका सबसे ज्यादा होती है। यह गतिविधि छात्रों की व्यक्तिगत रुचि, सोच एवं क्रियाकलाप को प्रतिबिंबित करती है। एक छात्राध्यापक के लिए उनके प्रशिक्षण संस्थान में पाठ्य सहगामी गतिविधि के रूप में उन सभी गतिविधियों का न सिर्फ आयोजन किया जाना चाहिए बल्कि सभी छात्राध्यापकों को इनमें सम्मिलित होने की अनिवार्यता होनी चाहिए क्योंकि इन्हीं गतिविधियों को इन्हें विद्यालयों में आयोजित करना है। साथ ही ये गतिविधि छात्रों के मनोभावों को समझने एवं उनके अनुसार शिक्षण विधि के उपयोग करने में भी शिक्षको के लिए प्रभावी होता है। सामान्यतः छत्तीसगढ़ के विद्यालयों में वर्तमान आयोजित होने वाली गतिविधियों के अनुसार इन्हे छः प्रकार में बाटा जा सकता है।

पाठ्य सहगामी गतिविधि अपने उद्देश्य के आधार पर निम्नलिखित प्रकार के होते हैं—

1. शारीरिक गतिविधि :— विद्यालयीन खेलकूद, एनसीसी, एनएसएस एवं स्काउट कार्यक्रम
2. सांस्कृतिक गतिविधि :— विद्यालय वार्षिक उत्सव में सहभागीता

:— नृत्य, नाटक या कविता के कार्यक्रम में सहभागीता

3. साहित्यिक गतिविधि :— विद्यालय पत्र/पत्रिका में लेखन कार्य
 :— कविता/नाटक का लेखन में सहयोग
 :— कवि सम्मेलन जैसे कार्यक्रम में सहभागीता

4. क्लब गतिविधि :— ग्रीन क्लब, रेडक्रास समूह जैसे क्लब गतिविधियों में सदस्य बनकर सहभागीता

- :- सामूहिक रूप से विद्यालय के सेवा कार्य में सहयोग
5. छात्र प्रतिनिधि :- शाला नायक या कक्षा नायक के रूप में कार्य करना।
:- छात्रों से संबंधित समस्याओं को विद्यालय प्रबंधन के समझ रखना।
:- विद्यालय एवं छात्रों के बीच संपर्क का माध्यम बनना।
6. गणित/विज्ञान ओलंपियाड :- विज्ञान ओलंपियाड में सम्मिलित होना।
:- गणित संबंधि विभिन्न प्रतियोगिता में विद्यालय का प्रतिनिधित्व करना।
:- विज्ञान क्विज में सम्मिलित होना।
7. मॉडल प्रदर्शनी :- विभिन्न समस्याओं के लिए मॉडल निर्माण करना।
:- मॉडल प्रदर्शन कार्यक्रम में सम्मिलित होना।

समस्या कथन

“डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन”

अध्ययन के चर

स्वतंत्र चर	आश्रित चर
पाठ्य सहगामी गतिविधि अभिवृत्ति - विद्यालय आधारित गतिविधिया - पुस्तकालय गतिविधिया - सांस्कृतिक कार्यक्रम में सहभागिता - विद्यालय क्लब गतिविधिया - पाँचवे आयाम शारीरिक गतिविधियाँ संस्थान के प्रकार - शासकीय - निजी लिंग	शिक्षण दक्षता - योजना निर्माण - प्रस्तुतीकरण - समापन - मूल्यांकन - प्रबंधन

1. पुरुष 2. महिला	
----------------------	--

चरों की प्रकार्यात्मक परिभाषा

- **शिक्षण दक्षता** – प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण दक्षता से तात्पर्य बी.के. पासी और एम.एस. ललिता द्वारा निर्मित शिक्षण दक्षता मापनी (2001) को चयनित छात्राध्यापकों पर प्रशासित करने के उपरांत प्राप्त प्राप्तांकों से है, जिसमें कुल 21 पद हैं।
- **पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति** – प्रस्तुत अध्ययन में पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति से तात्पर्य रोमेश कुमार जंघेल एवं सुमित्रा मौर्य द्वारा निर्मित पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति मापनी (2025) को चयनित छात्राध्यापकों पर प्रशासित करने के उपरांत प्राप्त प्राप्तांकों से है, जिसमें कुल 40 पद हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी गतिविधि के पहले आयाम विद्यालय आधारित गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की पाठ्य सहगामी गतिविधि के दूसरे आयाम पुस्तकालय गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की पाठ्य सहगामी गतिविधि के तीसरे आयाम सांस्कृतिक कार्यक्रम में सहभागिता, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
5. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता पर पाठ्य सहगामी गतिविधि के चौथे आयाम विद्यालय क्लब गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

6. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की पाठ्य सहगामी गतिविधि के पाँचवे आयाम शारीरिक गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना:—अनुसंधान कार्य के संचालन के लिए परिकल्पना का निर्माण करना आवश्यक है। परिकल्पना पूर्ण अनुसंधान को दिशा प्रदान करती है, जिसमें अनुसंधानकर्ता अपने समस्या को अनुमानित रूप से परिभाषित करता है। तथा उस परिभाषित समस्या को सांख्यिकीय गणनाओं के माध्यम से स्वीकार या अस्वीकार करता है। अतः शोध शीर्षक डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति, शाला अनुभव कार्यक्रम तथा सूचना प्रौद्योगिकी अभिवृत्ति का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन के अंतर्गत निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है—

- H_{0-1.0} : डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति, लिंग एवं संस्थान के प्रकार का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा ।
- H_{0-1.1} : डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी गतिविधि के पहले आयाम विद्यालयीन गतिविधि, लिंग एवं संस्थान के प्रकार का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा ।
- H_{0-1.2} : डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी गतिविधि के दूसरे आयाम पुस्तकालय गतिविधि, लिंग एवं संस्थान के प्रकार का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा ।
- H_{0-1.3} : डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी गतिविधि के तीसरे आयाम विषय का ज्ञान, लिंग एवं संस्थान के प्रकार का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा ।
- H_{0-1.4} : डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति के चौथे आयाम विद्यालय क्लब गतिविधि, लिंग एवं संस्थान के प्रकार का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा ।
- H_{0-1.5} : डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति के पाँचवे आयाम शारीरिक गतिविधि, लिंग एवं संस्थान के प्रकार का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा ।

अध्ययन की परिसीमाएँ—परिसीमा अध्ययन के विस्तृत क्षेत्र को सीमित एवं नियंत्रित करने का कार्यकरती है। यह शोधकर्ता के समय एवं धन को बचाती है तथा अनावश्यक कार्य करने से रोकती है। प्रस्तावित शोध अध्ययन को निम्नानुसार परिसीमित किया गया है—

- प्रस्तुत शोध अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के पॉचों संभाग से 10 शासकीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान (DIET) तथा 10 निजी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में अध्ययनरत डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष के छात्राध्यापकों तक परिसीमित है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन शासकीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान (DIET) से 200 पुरुष छात्राध्यापकों एवं 200 महिला छात्राध्यापकों तथा निजी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान से 200 पुरुष छात्राध्यापकों एवं 200 महिला छात्राध्यापकों तक परिसीमित है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन कुल 800 छात्राध्यापकों के अध्ययन तक परिसीमित है ।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति, शाला अनुभव कार्यक्रम तथा सूचना प्रौद्योगिकी अभिवृत्ति का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव तक परिसीमित है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में बी.के. पासी और एम.एस. ललिता द्वारा निर्मित शिक्षण दक्षता मापनी (2001), रोमेश कुमार जंधेल एवं सुमित्रा मौर्य के द्वारा निर्मित पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति मापनी (2025) तथा शाला अनुभव कार्यक्रम प्रभावशीलता मापनी (2025) एवं नसरीन और फातिमा इस्लाही (2005) द्वारा निर्मित सूचना प्रौद्योगिकी अभिवृत्ति मापनी (2005) तक परिसीमित है ।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

संबंधित साहित्य का अध्ययन का अर्थ अपने अनुसंधान से संबंधित उन सभी पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं, शोध प्रबंधों, ज्ञानकोष एवं अभिलेखों से है जिनसे शोधकर्ता को अपनी समस्या के चयन करने, परिकल्पना तथा उद्देश्यों का निर्माण करने, सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करने एवं अपने अनुसंधान को आगे बढ़ाने का एक अंतर्दृष्टि प्राप्त होता है। संबंधित साहित्य का अध्ययन करना अनुसंधान प्रक्रिया का महत्वपूर्ण चरण है क्योंकि व्यक्ति अपने इतिहास में किए कार्य से सीख प्राप्त करता है तथा बार बार उसी प्रकार के कार्य को दोहराने से बचता है एवं पूर्व में निर्मित ज्ञान में कुछ अंश जोड़ने का प्रयास करता है।

शिक्षण दक्षता से संबंधित

1. फातिमा, एन. और मट्टू एम.आई. (2024) द्वारा लैंगिक आधार पर उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता पर अध्ययन किया। जिसके लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। तथा न्यादर्श के रूप में लद्दाख क्षेत्र के 150 पुरुष शिक्षकों एवं 150 महिला शिक्षकों का साधारण यादृच्छिक चयन विधि के द्वारा चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन के लिए विमुल विदुषी और नंदकिशोर (2020) के द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत उपकरण शिक्षकों की शिक्षक दक्षता का मापनी का उपयोग किया गया।
प्रस्तुत शोध से निष्कर्ष प्राप्त किया गया कि –
 - महिला शिक्षकों की पाठ योजना निर्माण करने की दर पुरुष शिक्षकों से अधिक होती है।
 - कक्षा के प्रभावी एवं व्यवस्थित प्रबंधन में महिला शिक्षकों की तुलना में पुरुष शिक्षक ज्यादा प्रभावी होते हैं।
2. शील, सुशांत (2024) के द्वारा पश्चिम बंगाल में डी.एल.एड. पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता पर अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन कार्य में सत्र 2021–23 के डी.एल.एड. में अध्ययनरत 3500 छात्राध्यापकों, 560 शिक्षक प्रशिक्षकों तथा 70 प्रशिक्षण संस्थान को अध्ययन हेतु लिया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त किया गया कि –
 - शाला अनुभव कार्यक्रम से पूर्व एवं शाला अनुभव कार्यक्रम के पश्चात छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता में सकारात्मक परिवर्तन होता है।
 - शासकीय एवं निजी दोनों प्रकार के संस्थानों के छात्राध्यापकों के कक्षा प्रबंधन एवं अन्य प्रशासकीय क्षमता में इस कार्यक्रम से वृद्धि होती है।
3. गोड़, रविकांत. (2023) द्वारा प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रस्तुत शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा न्यादर्श के लिए उत्तर प्रदेश के मेरठ मंडल के प्राथमिक स्तर के 400 शिक्षकों को लिया गया। प्रस्तुत शोध से निष्कर्ष प्राप्त किया गया कि –
 - बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम से उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता बी.एड. एक वर्षीय पाठ्यक्रम से उत्तीर्ण शिक्षकों से उच्च है।
4. शर्मा (2019)द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा तथा सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन किया गया। प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में 100 शिक्षकों एवं 1000 विद्यार्थियों का चयन किया गया तथा उपकरण के रूप

मे.के.एन. शर्मा के द्वारा निर्मित सृजनात्मकता मापनी तथा सीमा संघाई द्वारा निर्मित अभिप्रेरणा मापनी का उपयोग किया गया। प्रस्तुत शोध से निष्कर्ष प्राप्त किया गया कि –

- सहशिक्षा वाले प्रशिक्षण संस्थान तथा महिला शिक्षा वाले प्रशिक्षण संस्थान के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. डॉ. कविता वर्मा और हितेश्वरी आदिल.(2024)द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक विकास एवं शिक्षण दक्षता का सहसंबंधात्मक अध्ययन किया। इस शोध में न्यादर्श हेतु दुर्ग जिले से शहरी क्षेत्र से 150 एवं ग्रामीण क्षेत्र से 150 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चुना गया। जिसमें सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया तथा डेटा संग्रहण के लिए पासी एवं लथिया **(2011)** द्वारा निर्मित शिक्षण दक्षता मापनी का उपयोग किया गया।

इस शोध से निष्कर्ष पाया गया कि शिक्षकों के व्यवसायिक विकास और शिक्षण दक्षता में उच्च धनात्मक सहसंबंध होता है।

पाठ्य सहगामी गतिविधि

1. वर्मा, डॉ. रश्मि. (2020) ने शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में संचालित विभिन्न क्लबों का प्रशिक्षु शिक्षकों पर प्रभाव : एक वर्णनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया जिसमें न्यादर्श के लिए 120 छात्राध्यापकों का चयन सरल यादृच्छिक विधि से किया गया। साथ ही साहित्य क्लब, विज्ञान क्लब, एनएसएस, सांस्कृतिक क्लब एवं इको क्लब आदि से 25–25 प्रशिक्षुओं को लिया गया। प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधकर्ता का स्वनिर्मित उपकरण, प्रशिक्षु शिक्षकों पर क्लब गतिविधि का प्रभाव प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूचि का उपयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन से निष्कर्ष पाया गया कि –

- क्लब गतिविधियों में भागीदारी से प्रशिक्षुओं की प्रस्तुती, लेखन, संवाद कौशल तथा पाठ योजना क्षमता में सुधार होता है।
- आयोजनों के संचालन और प्रबंधन में संलग्न प्रशिक्षुओं के नेतृत्व गुणों, योजना निर्माण और समय प्रबंधन के दक्षता में वृद्धि हुई है।
- नाट्य, साहित्य एवं कला क्लब में सक्रिय प्रशिक्षुओं में रचनात्मकता, आत्मविश्वास एवं भावनात्मक अभिव्यक्ति का स्तर उच्च पाया गया।

2. जोशी, डॉ. कुसुमलता. (2020)ने शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से नेतृत्व विकास एक प्रायोगिक अध्ययन किया। जिसमें मात्रात्मक एवं गुणात्मक विधि का उपयोग करते हुए मिश्र विधि का उपयोग किया। अध्ययन हेतु साधारण यादृच्छिक विधि से 40 प्रशिक्षु शिक्षकों का न्यादर्श हेतु चयन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रूप में नेतृत्व गुण स्केल (डॉ. एन.के. चोपड़ा व डॉ. बी.एस. चावला) तथा केस स्टडी गाइड (स्वनिर्मित)का उपयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त किया गया कि –

- खेल एवं टीम क्रियाकलान से नेतृत्व क्षमता का विकास होता हैं।
- समूह कार्यों में प्रशिक्षुओं का आत्मविश्वास बढ़ता हैं।
- नेतृत्व गुणों में लिंग या विषय का विशेष प्रभाव नहीं पाया गया।

3. गुप्ता.(2019)ने किशोर बालक एवं बालिकाओं की मानसिक परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पाठ्य सहगामी गतिविधि का तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध में 700 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया एवं स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। अध्ययन उपरांत निष्कर्ष प्राप्त किया गया कि –

- किशोर बालकों की मानसिक परिपक्वता किशोर बालिकाओं से ज्यादा पाई गई।
- पाठ्य सहगामी गतिविधि में भाग लेने वाले किशोर छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन पाया गया। छात्रों की व्यवहारिकता में सकारात्मक परिवर्तन पाया गया।
- पाठ्य सहगामी गतिविधि से किशोर बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में परिवर्तन पाया गया। लड़कियों में परिपक्वता जल्दी आती है, अतः उनकी शैक्षिक उपलब्धि ज्यादा रहती हैं।

4. टॉक, योगेश कुमार. (2019)के द्वारा पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने व भाग न लेने वाले प्राथमिक प्रशिक्षण विद्यालयों के प्रशिक्षार्थियों की सृजनात्मकता, मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया एवं राजस्थान राज्य के बीकानेर संभाग के 1000 प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के लिए पाठ्यसहगामी क्रियाओं के मापन के लिए स्वनिर्मित उपकरण का उपयोग किया गया।

अध्ययन उपरांत निष्कर्ष पाया गया कि –

- प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों की पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने व भाग न लेने वाले प्रशिक्षार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
- प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों की पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने व भाग न लेने वाले प्रशिक्षार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

अध्ययन का औचित्य

प्राथमिक शिक्षा बच्चों के बौद्धिक एवं मानसिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके लिए विशेष पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, प्रयोग एवं गतिविधियों का आयोजन विद्यालय में शिक्षकों के द्वारा किया जाता है। इन योजनाओं एवं विधियों को वास्तविक रूप से बच्चों तक ले जाने में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। अतः शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम में ऐसे विषयवस्तु, तथ्यों एवं प्रयोगों का समावेश होना आवश्यक है जो भावी शिक्षकों को पेशेवर के रूप में तैयार कर सके तथा जो छात्रों की समस्याओं को समझते हुए उसे दूर कर सके एवं राष्ट्र, समाज तथा परिवार की आवश्यकता के अनुसार नवीन पीढ़ी को तैयार कर सकें। प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु लगभग प्रत्येक जिले में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान अर्थात् डाइट तथा इसकी प्रकार की अन्य निजी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की गई है, परन्तु क्या ये संस्थान अपने दायित्व का उस स्तर पर निर्वहन कर पा रहे हैं ? यह एक सोचनीय प्रश्न

मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव

H_{0-1.0} डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्यसहगामी अभिवृत्ति, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

परिणाम

मुख्य प्रभाव

पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति का मुख्य प्रभाव

- पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति का शिक्षण दक्षता पर सार्थक एवं सकारात्मक प्रभाव पाया गया।
- उच्च पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति वाले छात्राध्यापकों का शिक्षण दक्षता निम्न पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति वाले छात्राध्यापकों से अधिक पाया गया।

संस्थान प्रकार का मुख्य प्रभाव

- डी.एल.एड. संस्थानों का शिक्षण दक्षता पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
- शासकीय डी.एल.एड. संस्थानों (डाइट) के छात्राध्यापकों का शिक्षण दक्षता अशासकीय डी.एल.एड. संस्थानों से के छात्राध्यापकों से उच्च पाया गया।

लिंग का मुख्य प्रभाव

- डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के लिंग एवं शिक्षण दक्षता में सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

अंतःक्रियात्मक प्रभाव

पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति x संस्थान प्रकार

- पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति एवं संस्थान का छात्राध्यापकों के शिक्षण दक्षता पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
- शासकीय संस्थानों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव निजी संस्थानों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव से अधिक पाया गया।

पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति x लिंग

पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

संस्थान के प्रकार x लिंग

संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति x संस्थान प्रकार x लिंग

पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति, संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

परिणाम

यह स्पष्ट करते हैं कि परिकल्पना $H_{0-1.0}$ डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अंतः क्रियात्मक परिकल्पना के अंतर्गत पाठ्य सहगामी गतिविधि एवं संस्थान के प्रकार का संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा पाठ्य सहगामी गतिविधि एवं लिंग, संस्थान के प्रकार एवं लिंग और पाठ्य सहगामी गतिविधि, संस्थान के प्रकार, एवं लिंग शिक्षण दक्षता पर प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

$H_{0-1.1}$:- डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्यसहगामी अभिवृत्ति के पहले आयाम विद्यालयीन गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

परिणाम

मुख्य प्रभाव**विद्यालयीन गतिविधि का मुख्य प्रभाव**

- विद्यालयीन गतिविधि का शिक्षण दक्षता पर सार्थक एवं सकारात्मक प्रभाव पाया गया।
- उच्च विद्यालयीन गतिविधि वाले छात्राध्यापकों का शिक्षण दक्षता निम्न विद्यालयीन गतिविधि वाले छात्राध्यापकों से अधिक पाया गया।

संस्थान प्रकार

- डी.एल.एड. संस्थानों (शासकीय एवं निजी) का शिक्षण दक्षता पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
- शासकीय डी.एल.एड. संस्थानों (डाइट) के छात्राध्यापकों का शिक्षण दक्षता अशासकीय डी.एल.एड. संस्थानों के छात्राध्यापकों से उच्च पाया गया।

लिंग का मुख्य प्रभाव

- डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शिक्षण दक्षता पर लिंग के आधार पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

अंतःक्रियात्मक प्रभाव**विद्यालयीन गतिविधि x संस्थान के प्रकार**

- विद्यालयीन गतिविधि एवं संस्थान का छात्राध्यापकों के शिक्षण दक्षता पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
- शासकीय संस्थानों के छात्राध्यापकों के शिक्षण दक्षता पर विद्यालयीन गतिविधि का प्रभाव निजी संस्थानों के छात्राध्यापकों के शिक्षण दक्षता पर विद्यालयीन गतिविधि के प्रभाव से अधिक पाया गया।

विद्यालयीन गतिविधि x लिंग

विद्यालयीन गतिविधि एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

संस्थान के प्रकार x लिंग

संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

विद्यालयीन गतिविधि x संस्थान प्रकार x लिंग

विद्यालयीन गतिविधि, संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

परिणाम

यह स्पष्ट करते हैं कि परिकल्पना $H_{0-1.1}$ डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति के पहले आयाम विद्यालयीन गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती

है। अंतः क्रियात्मक परिकल्पना के अंतर्गत पाठ्य सहगामी गतिविधि एवं संस्थान के प्रकार का संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा विद्यालयीन गतिविधि, संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

H0-1.2:- डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्यसहगामी अभिवृत्ति के दूसरे आयाम पुस्तकालय गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

परिणाम

मुख्य प्रभाव

पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति का मुख्य प्रभाव

- पुस्तकालय गतिविधि का शिक्षण दक्षता पर सार्थक एवं सकारात्मक प्रभाव पाया गया।
- उच्च पुस्तकालय गतिविधि वाले छात्राध्यापकों का शिक्षण दक्षता निम्न पुस्तकालय गतिविधि वाले छात्राध्यापकों से अधिक पाया गया।

संस्थान प्रकार का मुख्य प्रभाव

- डी.एल.एड. संस्थानों (शासकीय एवं निजी) का शिक्षण दक्षता पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
- शासकीय डी.एल.एड. संस्थानों (डाइट) के छात्राध्यापकों का शिक्षण दक्षता अशासकीय डी.एल.एड. संस्थानों से के छात्राध्यापकों से उच्च पाया गया।

लिंग का मुख्य प्रभाव

- डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के लिंग एवं शिक्षण दक्षता में सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

अंतःक्रियात्मक प्रभाव

पुस्तकालय गतिविधि x संस्थान प्रकार

पुस्तकालय गतिविधि एवं संस्थान के प्रकार का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

पुस्तकालय गतिविधि x लिंग

विद्यालयीन गतिविधि एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया।

- निम्न पुस्तकालय गतिविधि में पुरुष छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता महिला छात्राध्यापकों से अधिक पाया गया।
- उच्च पुस्तकालय गतिविधि में महिला छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता पुरुष छात्राध्यापकों से अधिक पाया गया।
- उच्च पुस्तकालय गतिविधि में सम्मिलित छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता निम्न पुस्तकालय गतिविधि में सम्मिलित छात्राध्यापकों से अधिक पाया गया।

संस्थान के प्रकार x लिंग

संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

पुस्तकालय गतिविधि x संस्थान प्रकार x लिंग

पुस्तकालय गतिविधि, संस्थान प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

परिणाम

यह स्पष्ट करते हैं कि परिकल्पना $H_{0-1.2}$ डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति के दूसरे आयाम पुस्तकालय गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अंतः क्रियात्मक परिकल्पना के अंतर्गत पुस्तकालय गतिविधि एवं संस्थान के प्रकार का संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना को स्वीकृत होती है तथा पुस्तकालय गतिविधि एवं लिंग के अंतःक्रियात्मक प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं। संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती हैं एवं पुस्तकालय गतिविधि, संस्थान प्रकार तथा लिंग के संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

$H_{0-1.3}$:- डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्यसहगामी अभिवृत्ति के तीसरे आयाम सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

परिणाम

मुख्य प्रभाव

सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता का मुख्य प्रभाव

- सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता का शिक्षण दक्षता पर सार्थक एवं सकारात्मक प्रभाव पाया गया।

- उच्च सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता वाले छात्राध्यापकों का शिक्षण दक्षता निम्न सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता वाले छात्राध्यापकों से अधिक पाया गया।

संस्थान प्रकार का मुख्य प्रभाव

- डी.एल.एड. संस्थानों (शासकीय एवं निजी) का शिक्षण दक्षता पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव निजी डी.एल.एड संस्थानों में शासकीय संस्थानों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

लिंग का मुख्य प्रभाव

- लिंग (पुरुष एवं महिला) का शिक्षण दक्षता पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
- महिला छात्राध्यापकों का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव पुरुष छात्राध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

अंतःक्रियात्मक प्रभाव

सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता x संस्थान प्रकार

- सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता एवं संस्थान का छात्राध्यापकों के शिक्षण दक्षता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता x लिंग

- सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया।
- महिला छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता में सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता का प्रभाव पुरुष छात्राध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

संस्थान के प्रकार x लिंग

संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

विद्यालयीन गतिविधि x संस्थान प्रकार x लिंग

विद्यालयीन गतिविधि, संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

परिणाम

यह स्पष्ट करते हैं कि परिकल्पना $H_{0-1.3}$ डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति के पहले तीसरे आयाम सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना

अस्वीकृत होती है। अंतःक्रियात्मक परिकल्पना के अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता एवं संस्थान के प्रकार का संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता एवं लिंग के संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है वैसे ही सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता, संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

H_{0-1.4}:-डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की पाठ्यसहगामी अभिवृत्ति के चौथे आयाम विद्यालय क्लब गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा ।

परिणाम

मुख्य प्रभाव

विद्यालय क्लब गतिविधि का मुख्य प्रभाव

- विद्यालय क्लब गतिविधि का शिक्षण दक्षता पर सार्थक एवं सकारात्मक प्रभाव पाया गया।
- उच्च विद्यालय क्लब गतिविधि वाले छात्राध्यापकों का शिक्षण दक्षता निम्न विद्यालय क्लब गतिविधि वाले छात्राध्यापकों से अधिक पाया गया।

संस्थान के प्रकार का मुख्य प्रभाव

- विद्यालय क्लब गतिविधि से डी.एल.एड. संस्थानों (शासकीय एवं निजी) के शिक्षण दक्षता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

लिंग का मुख्य प्रभाव

- लिंग (पुरुष एवं महिला) का शिक्षण दक्षता पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
- विद्यालय क्लब गतिविधि का प्रभाव पुरुष छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता पर महिला छात्राध्यापकों से ज्यादा पाया गया।

अंतःक्रियात्मक प्रभाव

सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता x संस्थान के प्रकार

- विद्यालय क्लब गतिविधि एवं संस्थान के प्रकार का छात्राध्यापकों के शिक्षण दक्षता पर अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता x लिंग

- विद्यालय क्लब गतिविधि एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

संस्थान के प्रकार x लिंग

संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

विद्यालयीन गतिविधि x संस्थान प्रकार x लिंग

विद्यालयीन गतिविधि, संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

परिणाम

यह स्पष्ट करते हैं कि परिकल्पना **H_{0-1.4}** डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति के पहले चौथे आयाम विद्यालय क्लब गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अंतःक्रियात्मक परिकल्पना के अंतर्गत विद्यालय क्लब गतिविधि एवं संस्थान के प्रकार का संयुक्त प्रभाव, विद्यालय क्लब गतिविधि एवं लिंग के संयुक्त प्रभाव, संस्थान एवं लिंग के संयुक्त प्रभाव तथा विद्यालय क्लब गतिविधि, संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

H_{0-1.5}:-डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की पाठ्यसहगामी अभिवृत्ति के पाँचवें आयाम शारीरिक गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

परिणाम

मुख्य प्रभाव

शारीरिक गतिविधि का मुख्य प्रभाव

- शारीरिक गतिविधि का शिक्षण दक्षता पर सार्थक एवं सकारात्मक प्रभाव पाया गया।
- उच्च शारीरिक गतिविधि वाले छात्राध्यापकों का शिक्षण दक्षता निम्न शारीरिक गतिविधि वाले छात्राध्यापकों से अधिक पाया गया।

संस्थान प्रकार का मुख्य प्रभाव

- डी.एल.एड. संस्थानों (शासकीय एवं निजी) का शिक्षण दक्षता पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

- शारीरिक डी.एल.एड. संस्थानों के छात्राध्यापकों के शिक्षण दक्षता पर शारीरिक गतिविधि का प्रभाव निजी डी.एल.एड. संस्थानों के छात्राध्यापकों से अधिक पाया गया।

लिंग का मुख्य प्रभाव

- लिंग (पुरुष एवं महिला) का शिक्षण दक्षता पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
- पुरुष छात्राध्यापकों का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव महिला छात्राध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

अंतःक्रियात्मक प्रभाव

शारीरिक गतिविधि x संस्थान प्रकार

- शारीरिक गतिविधि एवं संस्थान का छात्राध्यापकों के शिक्षण दक्षता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

शारीरिक गतिविधि x लिंग

- शारीरिक गतिविधि एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया।
- महिला छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता में शारीरिक गतिविधि का प्रभाव पुरुष छात्राध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

संस्थान के प्रकार x लिंग

संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

शारीरिक गतिविधि x संस्थान प्रकार x लिंग

विद्यालयीन गतिविधि, संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

परिणाम

यह स्पष्ट करते हैं कि परिकल्पना $H_{0-1.5}$ डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति के पहले पाँचवे आयाम शारीरिक गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अंतःक्रियात्मक परिकल्पना के अंतर्गत शारीरिक गतिविधि एवं संस्थान के प्रकार का संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है। शारीरिक गतिविधि एवं लिंग के संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है। वैसे ही संस्थान के प्रकार एवं लिंग के संयुक्त प्रभाव और शारीरिक गतिविधि, संस्थान के प्रकार एवं लिंग के संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

परिकल्पना की समग्र विवेचना

डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति, संस्थान एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन

डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति के मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव, संस्थान एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव का प्रसरण विश्लेषण सारांश (समग्र)

पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति (Cocurricular Attitude) का प्रभाव

प्रसरण का स्त्रोत	पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति	पहले आयाम विद्यालयीन गतिविधि	दूसरे आयाम पुस्तकालय गतिविधि	तीसरे आयाम सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता	चौथे आयाम विद्यालय क्लब गतिविधि	पाँचवे आयाम शारीरिक गतिविधि
शिक्षण दक्षता	16.609 **	11.588**	14.074**	14.526 **	16.609 **	8.822 **
संस्थान प्रकार	7.528 **	7.033*	5.377*	7.688 **	7.528 *	8.277 **
लिंग	3.559 •	2.448	2.061	7.117 **	3.559	4.088 *
पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति x संस्थान प्रकार	9.944 **	5.477*	3.042	2.482	3.034	2.132
पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति x लिंग	1.116 •	3.092	3.948*	5.813 *	9.944 **	5.756 *
शाला प्रकार x लिंग	3.034 •	2.278	2.615	1.728	1.116	2.375
पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति x शाला प्रकार x लिंग	1.485 •	1.873	2.767	1.773	1.485	2.114

- **मुख्य प्रभाव (Main Effect):** डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता पर पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति का मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया। अध्ययन में पाया गया कि पाठ्य सहगामी गतिविधियों में उच्च अभिवृत्ति वाले छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता निम्न अभिवृत्ति वालों छात्राध्यापकों से श्रेष्ठ पाई गई।

संभावित कारण – इसका कारण यह हो सकता है कि जो छात्र-अध्यापक खेलकूद, सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों में सक्रिय रुचि लेते हैं, उनमें आत्मविश्वास, प्रस्तुतीकरण कौशल और नेतृत्व क्षमता अधिक विकसित होती है। ये गतिविधियाँ प्रशिक्षुओं के सर्वांगीण विकास में सहायक होती हैं, जिससे वे कक्षा में विषयवस्तु को अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर पाते हैं।

- **अंतःक्रियात्मक प्रभाव** – पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति और संस्थान के प्रकार का शिक्षक दक्षता पर सार्थक अंतःक्रिया पाई गई।

संभावित कारण— इसका कारण यह हो सकता है कि सरकारी संस्थानों (DIET) में इन गतिविधियों का आयोजन अधिक नियोजित और मानक-आधारित होता है, जो उच्च अभिवृत्ति वाले छात्राध्यापकों की कार्यक्षमता को निखारने में निजी संस्थानों की तुलना में अधिक सफल रहता है।

2. संस्थान के प्रकार का प्रभाव

- **मुख्य प्रभाव** – शिक्षण दक्षता पर संस्थान के प्रकार का मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया। शासकीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान (डायट) के छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता निजी संस्थानों के छात्राध्यापकों से श्रेष्ठ मिली।

संभावित कारण – इसका मुख्य कारण सरकारी संस्थानों में विशेषज्ञ प्रशिक्षकों की उपलब्धता, बेहतर शैक्षणिक वातावरण, और सख्त अकादमिक अनुशासन हो सकता है। सरकारी संस्थानों में संसाधनों का उपयोग और प्रशिक्षण की निगरानी राज्य अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के मानकों के अनुसार अधिक व्यवस्थित होती है।

3. लिंग का मुख्य प्रभाव

- **मुख्य प्रभाव** – शिक्षण दक्षता पर लिंग का मुख्य प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

संभावित कारण – इसका कारण यह हो सकता है कि डी.एल.एड. प्रशिक्षण के दौरान पुरुष और महिला दोनों प्रशिक्षुओं को समान पाठ्यक्रम, एक जैसे प्रशिक्षण सत्र और एक ही प्रकार की शिक्षण पद्धतियों से गुजरना पड़ता है। प्रशिक्षण का वातावरण और संसाधन दोनों के लिए समान होने के कारण उनकी दक्षता में कोई बड़ा अंतर नहीं आता।

- **अंतःक्रियात्मक प्रभाव** – प्रस्तुत शोध में अभिवृत्ति $\times$ लिंग तथा संस्थान $\times$ लिंग के बीच कोई सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पाया गया।

संभावित कारण – इसका कारण यह हो सकता है कि छात्र-अध्यापक चाहे पुरुष हों या महिला, उनके कौशल विकास पर उनकी निजी अभिवृत्ति और संस्थान की सुविधाओं का प्रभाव स्वतंत्र रूप से पड़ता है, इसमें लिंग कोई निर्णायक बाधा या विशेष लाभ उत्पन्न नहीं करता।

परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणामों को परिकल्पना के क्रमानुसार प्रस्तुत किया गया है।

H_{0-1.0} :- डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्यसहगामी अभिवृत्ति, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

परिणाम

डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अंतःक्रियात्मक परिकल्पना के अंतर्गत पाठ्य सहगामी गतिविधि X संस्थान के प्रकार, पाठ्य सहगामी गतिविधि X लिंग, संस्थान के प्रकार X लिंग और पाठ्य सहगामी गतिविधि X संस्थान के प्रकार X एवं लिंग के अंतःक्रियात्मक प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

H_{0-1.1}:-डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्यसहगामी अभिवृत्ति के पहले आयाम विद्यालयीन गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

परिणाम

डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति के पहले आयाम विद्यालयीन गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अंतः क्रियात्मक परिकल्पना के अंतर्गत विद्यालयीन गतिविधि X संस्थान के प्रकार, विद्यालयीन गतिविधि X लिंग तथा विद्यालयीन गतिविधि X संस्थान के प्रकार X लिंग का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

H_{0-1.2}:-डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्यसहगामी अभिवृत्ति के दूसरे आयाम पुस्तकालय गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

परिणाम

यह स्पष्ट करते हैं कि परिकल्पना **H_{0-1.2}** डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति के दूसरे आयाम पुस्तकालय गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अंतः क्रियात्मक परिकल्पना के अंतर्गत पुस्तकालय गतिविधि एवं संस्थान के प्रकार का संयुक्त प्रभाव के

लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है तथा पुस्तकालय गतिविधि x लिंग संस्थान के प्रकार x लिंग एवं पुस्तकालय गतिविधि x संस्थान प्रकार x लिंग के संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

H0-1.3 :- डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्यसहगामी अभिवृत्ति के तीसरे आयाम सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

परिणाम

डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति के पहले तीसरे आयाम सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अंतःक्रियात्मक परिकल्पना के अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता एवं संस्थान के प्रकार का संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता एवं लिंग के संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है वैसे ही सांस्कृतिक कार्यक्रम सहभागिता, संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

H0-1.4:- डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की पाठ्यसहगामी अभिवृत्ति के चौथे आयाम विद्यालय क्लब गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति के पहले चौथे आयाम विद्यालय क्लब गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अंतःक्रियात्मक परिकल्पना के अंतर्गत विद्यालय क्लब गतिविधि एवं संस्थान के प्रकार का संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा विद्यालय क्लब गतिविधि एवं लिंग के संयुक्त प्रभाव, संस्थान एवं लिंग के संयुक्त प्रभाव तथा विद्यालय क्लब गतिविधि, संस्थान के प्रकार एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

H0-1.5:- डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की पाठ्यसहगामी अभिवृत्ति के पाँचवे आयाम शारीरिक गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति के पहले पाँचवे आयाम शारीरिक गतिविधि, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अंतःक्रियात्मक परिकल्पना के अंतर्गत शारीरिक गतिविधि एवं संस्थान के प्रकार का संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती है।

शारीरिक गतिविधि एवं लिंग के संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है। वैसे ही संस्थान के प्रकार एवं लिंग के संयुक्त प्रभाव और शारीरिक गतिविधि, संस्थान के प्रकार एवं लिंग के संयुक्त प्रभाव के लिए परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए:-

- डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता पर पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति का सार्थक प्रभाव पाया गया। उच्च पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति वाले छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता, निम्न अभिवृत्ति वाले छात्राध्यापकों से उच्च पाई गई।
- शिक्षण दक्षता पर पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति $\times$ संस्थान के प्रकार के मध्य सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव पाया गया।
- शिक्षण दक्षता पर पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति $\times$ लिंग, शाला अनुभव $\times$ लिंग, तथा संस्थान $\times$ लिंग का अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।
- शिक्षण दक्षता पर पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति के सभी पाँचों आयामों (विद्यालयीन गतिविधियाँ, पुस्तकालय गतिविधियाँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विद्यालय क्लब गतिविधियाँ और शारीरिक गतिविधियाँ) का सार्थक मुख्य प्रभाव पाया गया।

शैक्षिक उपादेयता

यह अनुसंधान प्राथमिक शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में निम्नलिखित रूप में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा

1. यह अध्ययन इस तथ्य को सुस्पष्ट रूप से प्रतिपादित करता है कि डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति का उनके शिक्षण दक्षता के विकास में एक सशक्त निर्धारक एवं पूर्वानुमानक के रूप में कार्य करती हैं। इस परिपेक्ष्य में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्रकारों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे पाठ्य सहगामी गतिविधियों को केवल अनुपूरक न मानकर प्रशिक्षण प्रक्रिया के अभिन्न एवं अनिवार्य घटक के रूप में समाविष्ट करें।

3. प्रस्तुत अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि छात्राध्यापकों में सकारात्मक व्यवसायिक अभिवृत्ति का विकास शिक्षण दक्षता के संवर्धन हेतु आवश्यक हैं। अतः शिक्षक प्रशिक्षकों को एक सशक्त प्रेरक एवं

मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हुए छात्राध्यापकों में नवाचारपरक, चिंतनशील तथा तकनीकी उन्मुख दृष्टिकोण का संवर्धन करना चाहिए।

4. अंततः यह अध्ययन गुणवत्तापूर्ण शिक्षक निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण शैक्षिक हस्तक्षेप के रूप में परिलक्षित होता है, जो न केवल छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता को सुदृढ़ करता है, बल्कि विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता, अधिगम परिणामों एवं समग्र शैक्षिक प्रभावशीलता में भी अभिवृद्धि सुनिश्चित करने की दिशा में सार्थक योगदान प्रदान करता है।

सुझाव

प्रस्तुत शोध कार्य में अध्ययन के उपरान्त निम्न सुझाव किये गये हैं –

1. छात्र-छात्राध्यापकों के लिए सुझाव –

- गतिविधियों में भागीदारी: छात्राध्यापकों को केवल किताबों तक सीमित न रहकर खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और क्लब गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए, क्योंकि ये उनके आत्मविश्वास और नेतृत्व कौशल को बढ़ाते हैं।

2. शिक्षकों (शिक्षक-प्रशिक्षकों) के लिए सुझाव

- मार्गदर्शक की भूमिका: प्रशिक्षकों को छात्राध्यापकों को केवल व्याख्यान देने के बजाय उन्हें रचनात्मक गतिविधियों और तकनीकी प्रयोग के लिए निरंतर प्रेरित करना चाहिए।

3. पालकों (अभिभावकों) के लिए सुझाव

- सर्वांगीण विकास का समर्थन: पालकों को समझना चाहिए कि शिक्षक बनने के लिए केवल अंकों की आवश्यकता नहीं है, बल्कि बच्चे का बहुमुखी प्रतिभा (खेल, कला, तकनीक) में दक्ष होना जरूरी है।
- शासकीय संस्थानों पर विश्वास: अनुसंधान बताता है कि शासकीय जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET) दक्षता निर्माण में अधिक प्रभावी हैं, अतः पालकों को शासकीय शिक्षा प्रणाली के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए।

4. प्रशासकों और नीति-निर्धारकों के लिए सुझाव

- निजी संस्थानों की निगरानी: निजी डी.एल.एड. कॉलेजों में संसाधनों, पुस्तकालयों और अनुशासन के कड़े मानक तय किए जाने चाहिए, क्योंकि वहां दक्षता का स्तर शासकीय की तुलना में कम पाया गया है।

अनुकरणीय अध्ययन

भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए इस अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित क्षेत्रों में शोध की संभावनाएँ बनती हैं:

1. डी.एल.एड छात्राध्यापकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति, आत्मप्रभावकारिता एवं शिक्षण अभिप्रेरणा का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन।
2. शिक्षक प्रशिक्षुओं के आईसीटी कौशल, नवाचारात्मक शिक्षण विधियों एवं कक्षा प्रबंधन क्षमता का शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन।
3. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शैक्षिक अभिवृत्ति, अधिगम शैली एवं शाला अनुभव कार्यक्रम का शिक्षण दक्षता पर तुलनात्मक अध्ययन।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. Fatima, N., & Mattu, M. I. (2024). Study of teaching competency of higher secondary school teachers on the basis of gender. *Education Administration Journal*, 30(1), 3020–3027.
2. Sheel, S. (2024). *Effectiveness of D.El.Ed. curriculum in West Bengal* (Doctoral dissertation). Sikkim Skill University.
3. God, R. (2023). *Comparative study of teaching competency and teaching effectiveness of primary school teachers in relation to teacher training programs* (Doctoral dissertation). Chaudhary Charan Singh University.
4. Neeraj. (2023). *Attitude of teacher educators towards ICT tools in Varanasi district* (Doctoral dissertation). V.B.S. Purvanchal University.
5. Rana, N. (2023). *Analytical study of school experience program in elementary teacher education* (Doctoral dissertation). Jamia Millia Islamia University.
6. Das, R. (2022). *Evaluation of school experience program in teacher training institutions of Assam* (Doctoral dissertation). Tezpur University.
7. Jha, S. K. (2022). *Critical study of internship in teacher training colleges* (Doctoral dissertation). Babasaheb Bhimrao Ambedkar Bihar University.
8. Tiwari, P. (2022). *Impact of school experience program activities on teaching competency of pupil teachers* (Doctoral dissertation). Barkatullah University.
9. Vashistha, P. (2022). *Effect of reflective teaching practices on decision-making, problem-solving, and creativity of pupil teachers* (Doctoral dissertation). K.R. Mangalam University.

10. Bhatnagar, A. (2021). *Study of relationship between time management and teaching competency of pupil teachers* (Doctoral dissertation). Barkatullah University.
11. Mehta, S. (2021). *Classroom management skills and teaching performance of pupil teachers* (Unpublished dissertation). Government College of Education, Bhopal.
12. Sharma, M. K. (2021). Comparative study of pupil teachers' attitude towards information technology in teacher education. *International Journal of Education and Modern Management*, 3(4), 3–4.
13. Yadav, S. P. (2021). *Comparative evaluation of government and private D.El.Ed. institutions in Chhattisgarh* (Doctoral dissertation). Pt. Sundarlal Sharma University.
14. Chauhan, M. (2020). Impact of interpersonal relationship skills on teaching quality of pupil teachers. *Indian Journal of Educational Research*, 22(4), 45–52.
15. Sharma, N. (2020). *Impact of teaching competency on achievement, motivation, and creativity of students* (Doctoral dissertation).
16. Verma, R. (2020). *Impact of institutional clubs on pupil teachers* (Doctoral dissertation). University of Allahabad.
17. Gupta, M. (2019). Evaluation of school internship program for B.Ed. students. *Mukt Shabd Journal*, 9(6), 2–4.
18. Jogan, S. (2019). Evaluating the effectiveness of school internship. *International Journal of Social Science*, 5(2), 3.
19. Kakkar, A. (2019). *Impact of club activities on educational and social development in teacher education* (Doctoral dissertation). Panjab University.
20. Mane, K. H. (2019). *Study of ICT attitude and teaching effectiveness among secondary school teachers* (Doctoral dissertation). Banaras Hindu University.
21. Mishra, N. (2019). *Impact of NSS and environmental club on value orientation of pupil teachers* (Doctoral dissertation). Devi Ahilya University.